मोहन राकेश के कथा–साहित्य में स्त्री–पुरूष संबंध : एक अध्ययन

राँची विश्वविद्यालय, राँची के हिन्दी विभाग (मानविकी संकाय) में पीएच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रारूप

2025

शोध–निर्देशक :

डॉ० हीरा नन्दन प्रसाद
एसोसिएट प्रोफेसर एवं पूर्व अध्यक्ष
हिन्दी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी :

अनिमा मिंज
(जे.आर.एफ.)
हिन्दी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य के इतिहास में हिन्दी कथा–साहित्य की अपनी अलग अहम् भूमिका रही है। कथा–साहित्य का शब्द सुनते ही हम सभी हिन्दी तथा गैर–हिन्दी भाषियों के मन–मस्तिष्क में सबसे पहले कथा–सम्राट 'प्रेमचन्द' का ही ध्यान आता है। लेकिन मोहन राकेश ने भी हिन्दी कथा–साहित्य के क्षेत्र में अपनी अहम् भूमिका निभाई है। हालाँकि मोहन राकेश ने नाटक के क्षेत्र में अत्यधिक सफलता प्राप्त की है, परन्तु उनके द्वारा रचित उपन्यास व कहानियाँ भी कम प्रचलित नहीं हुई हैं।

मूल रूप से कहा जाए तो कथा–साहित्य काल्पनिक होता है, लेकिन रचनाकार अपनी कुशल रचनात्मक कला से सभी पात्रों, घटनाओं और कथा को सजीव बना देता है। एक अच्छा और कुशल साहित्यकार अपनी रचनाओं को समाज के विभिन्न वर्गों के जन–जीवन से जोड़ता है, क्योंकि कथा–साहित्य या साहित्य समाज के परिदृश्य तथा समाज के हित में लिखी जाती है और लिखी जानी चाहिए।

हिन्दी की **'नई कहानी'** आन्दोलन के सशक्त कहानीकार के रूप में विख्यात मोहन राकेश का जन्म 8 जनवरी 1925 ई० को अमृतसर में हुआ था। उनका वास्तविक नाम 'मदन मोहन गुगलानी' था। वे उस दौर के शिक्षित लोगों की श्रेणी में आते थे। मोहन राकेश ने अपने सम्पूर्ण जीवन में तीन विवाह किए। उन्होंने पारिवारिक जीवन को बहुत नजदीक व गहराई से देखा था। वे स्त्री–पुरूष के बाहरी व आन्तरिक संबंधों से भली–भाँति परिचित थे। प्रेम, विवाह तथा विवाह के पश्चात् उत्पन्न तनाव, इन सभी चीजों का अनुभव उन्हें अच्छी तरह हो चुका था। इतने अनुभवी होने के कारण ही उनके रचनाओं में वर्णित स्त्री–पुरूष का जो संबंध है, वह सत्य व सजीव प्रतीत होता है। उन्होंने जो वास्तविक जीवन में जिया तथा अनुभव किया, वही उनकी रचनाओं के माध्यम से हम सभी पाठक वर्ग के समक्ष उपस्थित हुए हैं।

मोहन राकेश ने बहुत–सी कहानियाँ लिखी जो निम्न 'कहानी–संग्रह' में संकलित हैं–

(क) इन्सान के खंडहर (1950 ई०), (ख) नए बादल (1957 ई०)

(ग) जानवर और जानवर (1958 ई०), (घ) एक और जिन्दगी (1961 ई०)

(ङ) फौलाद का आकाश (1966 ई०)

इन सभी कहानी–संग्रह में पचास से भी अधिक कहानियाँ संग्रहित हैं। उनमें से कुछ प्रमुख कहानियाँ हैं– एक और जिन्दगी, सुहागिनें, मिस पाल, वासना की छाया में, नए बादल, उसकी रोटी, मलबे का मालिक, आर्द्रा, आखिरी सामान, जानवर और जानवर, अपरिचित, इंसान के खंडहर, फौलाद का आकाश, परमात्मा का कुत्ता, क्वार्टर, खाली, नन्हीं इत्यादि।

जिस प्रकार एक वाहन को चलाने के लिए दो पहियों की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार समाज रूपी वाहन को चलाने के लिए स्त्री और पुरूष की आवश्यकता पड़ती है। अगर वाहन का एक भी पहिया बिगड़ जाए तो वाहन बेकाम हो जाता है उसी प्रकार स्त्री और पुरूष का संबंध भी है जो किसी एक के बिना नहीं चल सकता है। मोहन राकेश के रचनाओं में उन्हीं संबंधों की व्याख्या करने का प्रयास मैंने किया है, उससे संबंधित कुछ कहानियाँ निम्न उल्लेखित हैं :–

मोहन राकेश की कहानी 'एक और हिन्दगी' में एक स्त्री और पुरूष के विवाहित जीवन तथा उनके बीच उत्पन्न तनाव से विघटित होते परिवार की कथा है। 'बीना' और 'प्रकाश' के अलगाव के कारण 'पलाश' (पाशी) पिता के प्रेम से वंचित रह जाता है। बीना और प्रकाश के संबंध–विच्छेद का कारण वे दोनों स्वयं ही हैं– **''विवाह के कुछ महीने बाद से ही पति–पत्नी अलग–अलग रहने लगे थे। विवाह के साथ जो सूत्र जुड़ना चाहिए था, वह जुड़ न सका था।**

दोनों अलग–अलग जगह काम करते थे और अपना–अपना स्वतंत्र ताना बाना बुनकर जी रहे थे।'' बीना और प्रकाश ने थोड़ी भी कोशिश नहीं की, अपने रिश्तों में सुधार लाने के लिए। प्रकाश तो यह भी कहता है कि, ''आखिर इंसान को जीने के लिए एक ही जीवन तो मिलता है– वही प्रयोग के लिए और जीने के लिए....जब एक प्रयाग सफल नहीं हुआ तो कैसे कहा जा सकता था कि दूसरा प्रयोग सफल होगा ही।'' इस प्रकार प्रकाश ने दूसरा विवाह भी किया, लेकिन वह भी सफल नहीं हो पाया।

राकेश जी कि 'सुहागिनें' कहानी भी स्त्री और पुरूष के उस संबंध को दर्शाती है, जहाँ केवल जरूरत या पैसों की लालसा रखने वाले पतियों– 'सुशील' और 'अजुध्या' के चरित्र को दर्शाया गया है। एक ओर 'मनोरमा' और 'काशी' मेहनत कर पैसे इकट्ठा करती हैं, और दूसरी ओर उनके पतियों द्वारा उनका शारीरिक, मानसिक व आर्थिक रूप से शोषण किया जाता है। मनोरमा और सुशील के बीच एक विचित्र संबंध है, जो केवल पैसों पर टिका हुआ है। मनोरमा को एक बच्चे की अकांक्षा थी– ''वह नहीं चाहता था कि अभी कुछ साल वे एक बच्चे को घर में आने दें उससे एक तो उसका फिगर खराब होने का डर था, फिर उसकी नौकरी का भी सवाल था।'' इस पंक्ति से पता चलता है कि सुशील को बच्चे की अकांक्षा तो दूर मनोरमा से भी प्रेम नहीं था। वह तो बस उसके शरीर और पैसों से प्रेम करता था।

'अपरिचित' नामक कहानी में मोहन राकेश ने रेलगाड़ी में सफर करते दो अनजान लोगों के वैवाहिक जीवन की विसंगतियों को दर्शाया है। एक स्त्री और पुरूष अपरिचित होते हुए भी अपनी व्यक्तिगत बातों को एक–दूसरे के सामने खुलकर कह देते हैं। कहानी, में जो स्त्री है वह एक बच्चे (बिट्टू) की माँ भी है। वह अपने पति से बहुत प्रेम करती है। यहाँ तक कि उसे विदेश भेजने के लिए वह अपने सारे गहनें बेच देती है। एक अनजान व्यक्ति से तो वह इतनी बातें करती है लेकिन अपने पति के सामने वह कुछ बोल नहीं पाती और इस

कारण उसका पति (दीशी) उसपर बहुत गुस्सा करता है– ''ये कहते हैं कि जिसके मुँह में जबान ही न हो, उसके साथ पूरी जिन्दगी कैसे काटी जा सकती है? ऐसे इन्सान में और एक पालतू जानवर में क्या फर्क है?'' दूसरी ओर कहानी का 'मैं' पात्र अपनी पत्नी से इस कारण परेशान है कि वह ज्यादा बातें करती है। इस प्रकार लेखक ने वैवाहिक जीवन के दो अलग–अलग पहलुओं को एक साथ मिलाने का कार्य किया है।

'फौलाद का आकाश' कहानी 'रवि' और 'मीरा' नामक दो युवा दम्पति की कहानी है। रवि एक स्टील प्लांट में लेबर–एडवाइजर है और मीरा एक गृहिणी है, जो चाहती है कि उसका पति उससे प्रेम करे और उसके साथ समय बिताए। उनके वैवाहिक जीवन को 10 वर्ष का समय बीत चुका है लेकिन इतने लंबे समय साथ रहने के बावजूद उनमें प्रेम कम, दूरियाँ अधिक है। रवि को बस अपने काम से मतलब है। मीरा कहती है– ''आँकड़े, आँकड़े, आँकड़े! क्या बिना आँकड़ों के रवि कोई बात सोच ही नहीं सकता था? मीरा को लगता था कि उससे प्यार करते वक्त भी वह मन–ही–मन चुम्बनों की गिनती करता होगा।''

अगली कहानी है– 'मिस पाल', जो एक अविवाहित युवती की कहानी है। वह दिल्ली में पाँच सौ की नौकरी छोड़कर भीड़–भाड़ इलाके से दूर कुल्लू में जाकर रहने लगती है। इस कहानी में मुख्य रूप से ऐसी लड़की की कहानी है, जिसे बचपन से ही उसकी भावनाओं तथा इच्छा को समझने वाला कोई नहीं मिला स्वयं उसके माता–पिता भी उसका तिरस्कार कर देते हैं– ''सोचो, माँ को मेरा घर में होना ही बुरा लगता था। पिताजी को मेरे संगीत सीखने से चिढ़ थी। वे कहा करते थे, मेरा घर–घर है रंडीखाना नहीं। भाइयों का जो थोड़ा बहुत प्यार था, वह भी भाभियों के आने के बाद छिन गया। मैंने आज तक कितनी–कितनी मुश्किल से अपनी अम......अ पवित्रता को बचाया है, यह मैं ही जानती हूँ।''

मिस पाल को कभी किसी से अपनत्व का आभास नहीं हुआ। बचपन की बुरी यादों से वह इतनी प्रभावित हुई थी कि वह कभी भी किसी व्यक्ति के निकट नहीं जा पाई। उसे लगता आसपास के सभी लोग उससे नफरत करते हैं, उसका मजाक उड़ाते हैं। मोहन राकेश ने मिस पाल और रणजीत के बीच बनते हुए रिश्ते की संभावना दिखाई है लेकिन वह पूरी तरह नहीं बन पाई।

मोहन राकेश ने कहानियाँ तो अत्यधिक मात्रा में लिखी, लेकिन उन्होंने उपन्यास मात्र तीन ही लिखे हैं– (क) अंधेरे बंद कमरे (1961 ई०) (ख) न आने वाला कल (1968 ई०) (ग) अंतराल (1972 ई०) इन तीनों उपन्यास में मोहन राकेश ने स्त्री–पुरूष संबंध को विस्तार रूप में दिखाया है।

राकेश जी का पहला उपन्यास 'अंधेरे बंद कमरे' (1961 ई०) है। इस उपन्यास में 'हरबंस' और 'नीलिमा' नामक पात्रों के द्वारा दाम्पत्य जीवन की कहानी कही गई है। इनके वैवाहिक जीवन में आधुनिक परिवेश के कारण दरारें और दूरियाँ बढ़ गई हैं, जिससे उनके प्रेम का सौंदर्य नष्ट होकर उसमें घुटन, ऊब और एकरसता का निर्माण हो गया है। हरबंस नीलिमा पर अपना नियंत्रण स्थापित करना चाहता है लेकिन नीलिमा एक महत्वकांक्षी स्त्री है। वह अपने जीवन की बागडोर किसी और के हाथ में नहीं देना चाहती है। वह स्वतंत्र होकर जीवन जीना चाहती है। इसी कारण हरबंस नीमिला पर अपना नियंत्रण न कर पाने के कारण अंदर–ही–अंदर घुट–घुट कर जी रहा होता है– "**मैं वर्षों से अपने अंदर तिल–मिल के गल रहा हूँ, मुझे कई बार लगता है कि मेरे लिए एक ही उपाय है और वह यह है कि अपने जीवन का अन्त कर दूँ।**"

हरबंस नीलिमा से बहुत सारी अपेक्षाएँ रखता है लेकिन अब वह जान गया है कि "**वह दस साल पहले जो कुछ नहीं दे सकती थी, वह आज भी नहीं दे सकती और दस साल और भी गुजर जाते, तो भी न दे पाती।**" हरबंस और नीलिमा जबरदस्ती के रिश्ते ढोए जा रहे थे। इस उपन्यास में हर एक पात्र एक अंधेरा कमरा का प्रतीक है। उन सभी का जीवन उस अंधेरे कमरे के समान है

जो एक बार उस कमरे में प्रवेश कर गया तो वहाँ से निकलने का कोई मार्ग दिखाई नहीं देता। इस उपन्यास के सभी पात्र अंततः उसी परिस्थिति में लौट आते हैं, जहाँ से वे लड़ाई–झगड़ा और संघर्ष करके निकल भागना चाहते हैं। वस्तुतः यह उपन्यास हरबंस और नीलिमा के अंतर्सघर्षों तथा पत्रकार मधुसूदन के एकान्तभोगी जीवन का प्रतिबिम्ब है।

मोहन राकेश का दूसरा उपन्यास है– 'न आने वाला कल' (1968 ई०)। इस उपन्यास को बहुत सारे लोगों ने 'अंधेरे बंद कमरे' का द्वितीय भाग माना है। इस उपन्यास में हिन्दी अध्यापक 'मनोज सक्सेना' तथा उसकी पत्नी 'शोभा' के अंतर्द्वंद्व की कहानी है। शोभा के पहले पति के मृत्यु हो जाने के बाद उसने मनोज से शादी की है। लेकिन शादी के छह महीने बाद ही वह मनोज को छोड़कर चली जाती है।

उपन्यास की कथा की शुरूआत मनोज के त्यागपत्र देने से होती है। मनोज कहीं–न–कहीं शोभा से छुटकारा पाने के लिए ही त्यागपत्र दे रहा था। मनोज ने बिना कुछ सोचे–समझे अचानक शोभा से विवाह कर लिया था और उसका पछतावा उसे आज हो रहा था– **"त्यागपत्र देने का निश्चय मैंने अचानक ही किया था। उसी तरह जैसे एक दिन अचानक शादी करने का निश्चय कर लिया था।"**

दूसरी और शोभा बहुत ही घमण्डी, अहंकारी तथा स्वतंत्र रूप से जीने वाली महिला थी। इस कारण वह मनोज को पूरे मन से स्वीकार नहीं कर पाती है और मनोज भी शोभा के साथ स्वयं को फंसा हुआ महसूस करता है। शोभा सबकुछ अपने अनुसार करना चाहती है। वह जब मनोज के यहाँ जाती है तब कहती है– **"यहाँ की सब चीजें अजीब है। यहाँ के लोग, यहाँ का रंग–ढंग, सभी बहुत अजीब हैं। मुझे तो लगता है कि मैं इस तरह यहाँ रहती रही, तो जल्दी ही पागल हो जाऊँगी।"** इस प्रकार भिन्न–भिन्न प्रवृति के लोग जब

आपस में मिलते हैं तक कैसी परिस्थिति उत्पन्न होती है, वही इस उपन्यास में दिखाया गया है।

मोहन राकेश का अंतिम उपन्यास है– 'अंतराल' (1972 ई०)। यह उपन्यास 'अंधेरे बंद कमरे' और 'न आने वाला कल' उपन्यासों की परम्परा में लिखा गया है। यह उपन्यास एक स्त्री–पुरूष संबंध के बीच रहने वाले अंतराल और अनेक समस्याओं पर उलझकर रह जाने की आंतरिक कहानी है। मूलतः यह संबंधों की विवचना का उपन्यास है।

इस उपन्यास की मुख्य पात्रा 'श्यामा' है, जो हाइस्कूल की हेड मिस्ट्रेस है। वह मात्र अट्ठाईस वर्ष की उम्र में ही विधवा हो गई है। उसका पति 'देव' टाइफाइड के कारण मर गया। देव की मृत्यु के बाद उसकी एक पुत्री, सास और ननद की जिम्मेदारी उसी पर आ पड़ी है। देव के साथ मात्र डेड़ वर्ष के वैवाहिक जीवन में उसके पास केवल अधूरापन और अकेलेपन की अनुभूतियाँ है। वह कहती है– ''वह डेढ़ साल भी मेरे साथ जिया नहीं था, सिर्फ मुझे झेलता रहा था।.....वह इतना चुप रहता था कि, कभी मुझे देख भी लेता किसी के साथ कुछ करते, तो शायद दूसरी तरफ मुँह कर लेता।''

श्यामा सदा ही अपनी एकांत और अधूरे जीवन का जिम्मेदार स्वयं को बताती है और कुमार से कहती है– ''यह वह नहीं था जिसने अपना सबकुछ मुझे नहीं दिया जिसने अपना बहुत कुछ अपने तक समेटकर रखा वह मैं थी। मैंने ही पहिले दिन से खुलकर अपने आपको उसे नहीं दिया। उसके साथ सबंध को सहने जैसा संबंध मानने की शुरूआत मेरी ओर से हुई थी। उसने एक खुला पन्ना मेरे सामने रखा था पर मैं कभी ठीक से हस्ताक्षर नहीं कर पाई।''

अतः हम देख पाते हैं कि मोहन राकेश की आधे से ज्यादा रचनाओं में स्त्री–पुरूष संबंध, आधुनिक जीवन में बदलते जीवन तथा व्यक्ति और उनकी

प्रतिक्रियाओं पर लेखक ने अपना विचार व्यक्त करते हुए स्त्री–पुरूष के सामाजिक व आर्थिक संबंधों का उल्लेख किया है।

मोहन राकेश की साहित्यिक भाषा सरल, सहज, प्रभावपूर्ण तथा मानवीय संवेदनाओं से परिपूर्ण होती है। उनकी रचनाओं में आधुनिकता का भावबोध मिलता है। अपनी मौलिक सर्जनात्मकता से उन्होंने आधुनिक हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया है।

उनकी कुशल रचनात्मक कला के कारण ही उन्हें सन् 1968 ई० में 'संगीत नाटक अकादमी' (आषाढ़ का एक दिन (1958 ई०) नाटक के लिए) द्वारा पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। साथ ही उन्हें 'नेहरू फेलोशिप', 'फिल्म सेंसर बोर्ड की सदस्यता' और 'राष्ट्रीय नाटक विद्यालय समिति' की सदस्यता भी प्राप्त हुई है।

अतः उपर्युक्त विवरण के आधार पर ही मैंने मेरे शोध का विषय चुना है– **"मोहन राकेश के कथा–साहित्य में स्त्री–पुरूष संबंध : एक अध्ययन"**। मेरे द्वारा किए जाने वाले इस शोध के माध्यम से मोहन राकेश के कथा–साहित्य की सभी नवीन तथा अनदेखी पहलुओं पर शोध तथा गहन अध्ययन की जाएगी, जो समाज को मौलिक एवं नई दृष्टि प्रदान करती है।

शोध की प्रेरणा :

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। जब एक व्यक्ति समाज में रहता है तो समाज से जुड़ी सभी नियमों का उसे पालन करना होता है। उन्हीं नियमों में–से एक है– वैवाहिक जीवन। इससे शायद ही कोई बच पाता है। वैवाहिक जीवन तभी सफल हो सकता है, जब स्त्री–पुरूष का संबंध तथा उनके बीच का सामंजस्य अच्छा हो। वर्तमान में मैंने अपने परिवार में और आसपास के दैनिक जीवन में स्त्री–पुरूष के बीच के संबंधों को बनते–बिगड़ते देखा है। यहाँ तक कि उनके घर और परिवार को टूटते–बिखरते देखा है। मूल रूप से कहा जाए

तो यह आधुनिक युग की सबसे बड़ी और मुख्य समस्या है। मेरे मन में हमेशा यह प्रश्न उठता है कि– यह समस्या क्यों और किस कारण से हो रही है?

मेरे अनुसार इस समस्या का समाधान बहुत जरूरी है और साहित्य ही एकमात्र ऐसा माध्यम है, जिसके द्वारा हम समाज को एक नई दृष्टि प्रदान कर सकते हैं। मेरे इस विषय में शोध करने की प्रेरणा मुझे स्नात्तकोत्तर के पढ़ाई के दरमियान मिली, जब मैंने मोहन राकेश के नाट्य साहित्य तथा कथा साहित्य का अध्ययन किया था। नेट की तैयारी करने के दौरान मुझे इस विषय में और अधिक रूचि होने लगी साथ ही परिवार और समाज के द्वारा मुझे इस शोध विषय के चुनाव की प्रेरणा मिली।

शोध का महत्व :

किसी शोध को करने के लिए शोधार्थी का एक उद्देश्य और उसके द्वारा किए गए शोध का अपना महत्व होता है। बिना उद्देश्य के शोध महत्वहीन और अर्थहीन होता है। साहित्य के क्षेत्र में शोध का अत्यधिक महत्व है। तभी तो यह साहित्य का एक हिस्सा है। शोध एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा हम समाज में बदलाव ला सकते हैं और समाज को एक नई दृष्टि प्रदान कर सकते हैं।

जब मैं शोध करने के लिए विषय का चुनाव कर रही थी तब मैंने बड़ी सावधानी और सोच–समझकर अपने विषय–**'मोहन राकेश के कथा–साहित्य में स्त्री–पुरूष संबंध : एक अध्ययन'** का चुनाव किया, क्योंकि आने वाले समय में मेरे द्वारा किए गए शोध का क्या महत्व और उसकी क्या प्रासंगिकता होगी, इस पर विचार करना अतिआवश्यक होता है। मैं मेरे विषय से संबंधित सभी रचनाओं के विभिन्न पहलुओं पर विचार–विमर्श, गहन् अध्ययन और उनका व्याख्यात्मक विश्लेषण करने का अथक प्रयास किया है। साथ ही उसके अज्ञात व अनछुए तथ्यों की खोज कर अपनी नवीन विचारधारा की भी व्याख्या करने का प्रयास करूँगी। इससे मेरी बौद्धिक क्षमता तो विकसित होगी ही, साथ ही इस शोध के

द्वारा समाज को सही दिशा–निर्देशन देने की भी मैं कोशिश करूँगी। जब मेरे शोध के द्वारा समाज में परिवर्तन और उनके विचार–धारा में बदलाव आएगी तभी मेरे शोध का उद्देश्य और महत्व सार्थक होगा।

शोध का उद्देश्य :

इस जगत में मानव–जीवन की सभी क्रियाएँ किसी–न–किसी उद्देश्य के लिए ही होती है। उसी प्रकार 'शोध' भी एक उद्देश्य से ही की जाती है। बिना उद्देश्य के मानव–जीवन और शोध दोनों ही अर्थहीन और बेकार है। शोध का मूल उद्देश्य है– अज्ञात व नवीन तथ्यों की खोज करना।

प्रस्तुत शोध **'मोहन राकेश के कथा–साहित्य में स्त्री–पुरूष संबंध : एक अध्ययन'** का उद्देश्य वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मोहन राकेश की कहानियों तथा उपन्यासों में व्यक्त की गई स्त्री–पुरूष संबंध से संबधित तथ्यों का सरलतापूर्वक अध्ययन करना, उसे समझना, पाठक वर्ग के समक्ष उपस्थित करना और उनसे जुड़ी समस्याओं का समाधान करने का प्रयास करना है। इस शोध के माध्यम से स्त्री–पुरूष के व्यक्तिगत तथा सामाजिक संबंधों का गहन अध्ययन कर उनके विविध पक्षों को उजागर करने का प्रयास किया जाएगा। साथ ही पारिवारिक और वैवाहिक जीवन में आने वाली विभिन्न समस्याओं को दिखाने का प्रयास किया जाएगा।

अतः प्रस्तुत शोध का मूल उद्देश्य स्त्री–पुरूष से संबंधित विचारों को तटस्थ व निष्पक्ष होकर उनके अनुछए तथा नवीन पक्षों को समाज के समक्ष प्रस्तुत करना है जो समाज के लिए उपादेय होगी।

शोध की प्रासंगिकता :

प्रस्तुत शोध कार्य हिन्दी साहित्य के **'नई कहानी'** आन्दोलन के सशक्त रचनाकार मोहन राकेश के रचनाओं में वर्णित स्त्री–पुरूष संबंध पर आधारित है। मोहन राकेश बहुत ही कुशल, प्रतिभा संपन्न और संवेदनशील रचनाकार हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं के द्वारा समाज को आईना दिखाने का प्रयास किया है। उनकी रचनाओं का अध्ययन कर हमें जीवंतता का अनुभव इसलिए होता है क्योंकि उनके वास्तविक जीवन में जो घटनाएँ हुई हैं एवं जिन परिस्थितियों का सामना वे कर चुके हैं, उसी का प्रतिबिम्ब हमें उनकी रचनाओं में देखने को मिलता है।

मोहन राकेश की रचनाओं में हमें वर्तमान जीवन की झलक स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है। जब से इस सृष्टि की उत्पति हुई है, स्त्री–पुरूष संबंध का सिलसिला चला आ रहा है और जबतक इस पृथ्वी पर जीवन है, यह संबंध सदैव कायम रहेगा। इस स्त्री–पुरूष के बीच के संबंध में प्रेम भी है, तनाव भी है, अकेलापन भी है और अलगाव के कारण अनेक विसंगतियाँ भी जुड़ी हुई हैं।

अतः मेरे इस शोध कार्य में वे सभी चीजें मौजूद होगी, जो आज वर्तमान में पूरे समाज में स्थित है और एक बड़ी समस्या के रूप में बढ़ती ही जा रही है। वर्तमान से ही अतीत और भविष्य से ही वर्तमान का जन्म होता है। अतः यह शोध अतीत, वर्तमान और भविष्य तीनों काल में प्रासंगिक और महत्वपूर्ण होगी।

शोध की उपादेयता :

शोध की उपादेयता का अर्थ है– शोध के महत्व, उपयोगिता और लाभ। शोध ज्ञान को बढ़ाता है, समस्याओं का समाधान करता है और समाज के विकास में भी सहायता करता है। प्रस्तुत शोध **'मोहन राकेश के कथा–साहित्य में स्त्री–पुरूष संबंधः एक अध्ययन'** के द्वारा तत्कालीन युग के पारिवारिक, सामाजिक व आर्थिक समस्याओं से जूझते स्त्री–पुरूष संबंधों की व्याख्या की

जाएगी। केवल वर्त्तमान ही नहीं यह हर काल की समस्या है। इस समस्या का समाधान करने का प्रयास इस शोध के माध्यम से किया जाएगा तथा एक नई दृष्टि, नया विचार और दिशा–निर्देशन का भी प्रयास किया जाएगा। साथ ही स्त्री–पुरूष के बीच के उन सभी पहलुओं का उजागर किया जाएगा जो अनदेखी–अनसुलझी है और जिसके कारण यह समस्या उत्पन्न होती है।

यदि इन समस्याओं का समाधान मोहन राकेश की कथाओं में शोध कार्य करते समय मिला तो उसे भी रेखांकित करने का प्रयास करूँगी जिससे मेरे अन्वेषण कार्य का लाभ पाठकों तक पहुचेगी।

शोध पद्धति :

जब एक शोधकर्त्ता एक व्यवस्थित और वैज्ञानिक तरीके से तथा शोध कार्य के विभिन्न नियमों का पालन कर अपने शोध कार्य को करता है, तब उसे ही शोध पद्धति कहा जाता है। प्रस्तुत शोध में शोध पद्धति के कुछ नियमों का पालन किया जाएगा। आधार ग्रंथ के रूप में मोहन राकेश के कथा–साहित्य को आधार बनाया जाएगा। साथ ही उनके कथा–साहित्य का अध्ययन करते हुए उनके समकालीन रचनाकारों के रचनाओं को भी शामिल किया जाएगा, ताकि शोध को प्रमाणिक रूप से प्रस्तुत किया जा सके। प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित पद्धतियों का प्रयोग किया जाएगा :–

क) **सर्वेक्षण पद्धति** : इस पद्धति के माध्यम से मोहन राकेश के कथा–साहित्य तथा उसकी प्रवृत्तियों का सूक्ष्म एवं गहन् अध्ययन कर शोध को क्रमबद्ध तरीके से प्रस्तुत किया जाएगा।

ख) **आलोचनात्मक पद्धति** : इस पद्धति को अपनाकर मोहन राकेश के कथा–साहित्य में स्त्री–पुरूष संबंध के दोनों पक्षों का वैज्ञानिक रूप से अध्ययन किया जाएगा। तथा उनकी रचनाओं में वर्णित अच्छे और बुरे दोनों पहलुओं पर बात की जाएगी।

ग) **मनोवैज्ञानिक पद्धति** : यह मेरे शोध की महत्वपूर्ण पद्धति होगी। रचनाकार और रचनागत सभी पात्रों के अंतर्चेतना का मनोवैज्ञानिक अध्ययन किया जाएगा। पात्रों का मनोवैज्ञानिक रूप से अध्ययन करना ही प्रस्तुत शोध का मूल उद्देश्य है।

घ) **समस्यामूलक पद्धति** : मोहन राकेश के कथा–साहित्य में स्त्री–पुरूष संध में वर्णित समस्याओं की व्याख्या तथा उसका निराकरण करने का प्रयास ही मेरे शोध का लक्ष्य है।

ङ) **तुलनात्मक पद्धति** : स्त्री और पुरूष के विचारों और उनके व्यक्तित्व की तुलना करने कार्य भी प्रस्तुत शोध में किया जाएगा।

च) **वर्गीय अध्ययन पद्धति** : प्रस्तुत शोध में न केवल एक व्यक्ति के विषय में अध्ययन करना है बल्कि स्त्री और पुरूष वर्ग के सभी लोगों पर अपनी नवीन विचारधारा प्रकट करना है।

छ) **विवचेनात्मक पद्धति** : इस पद्धति के माध्यम से मोहन राकेश के रचनाओं के सभी पहलुओं को गहराई से और तार्किक रूप से विचार–विमर्श किया जाएगा जिसमें सत्य–असत्य दोनों पक्षों का विश्लेषण किया जाएगा।

ज) **विवरणात्मक पद्धति** : मोहन राकेश के कथा–साहित्य में वर्णित घटना, स्थिति या व्यक्ति (पात्रों) की विशेषताओं का वर्णन किया जाएगा। इस खोजपूर्ण पद्धति के द्वारा हम कथा–साहित्य को बारीकी से समझ और उसका अध्ययन कर पाएँगे।

झ) **तुलनात्मक पद्धति** : इसके द्वारा स्त्री–पुरूष के बीच संबंधों की तुलना की जाएगी ताकि उनके बीच की समानताओं और अंतरों को समझा जा सके।

इसके अतिरिक्त इंटरनेट, वेबसाइट, पूर्ववर्ती शोध–ग्रंथ, अन्य संबंधित पुस्तकें, अखबार, पुस्तकालय, साहित्यिक पत्र–पत्रिकाओं इत्यादि समग्रियों का सहयोग लिया जाएगा।

इस प्रकार इस शोध पद्धति या प्रविधि और सामाग्रियों के द्वारा मोहन राकेश के रचनाओं से रचनागत पात्रों की मनःस्थिति, उनकी अंतर्चेतना, मानसिक द्वंद्व इत्यादि का मूल्यांकन करने में सहायता मिलेगी, जो प्रस्तुत शोध को सफल बनाने में सहायक होगी।

पूर्वानुसंधान :

प्राप्त जानकारी के अनुसार 'मोहन राकेश के कथा साहित्य कें स्त्री–पुरूष संबंधः एक अध्ययन' पर अभी तक शोध कार्य नहीं हुआ है। मोहन राकेश से संबंधित निम्नलिखित शोध कार्य हुए हैं :–

1. मोहन राकेश के कथा–साहित्य में नारी चरित्र, रोमिला रोस तिर्की, राँची विश्वविद्यालय, राँची 2013

2. मोहन राकेश के कथा–साहित्य में आधुनिकता बोध, मनोज कुमार यादव, राँची विश्वविद्यालय, राँची 2013

3. मोहन राकेश की कहानियों में स्त्री–पात्रों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन, मनोरमा, राँची विश्वविद्यालय, राँची 2022

4. मोहन राकेश की कहानियों के कथानकों की विविधिता, रीता कुमारी, राँची विश्वविद्यालय, राँची 2018

5. मोहन राकेश की कहानियाँ और मानवीय संवेदना, शोभा तिर्की, राँची विश्वविद्यालय, राँची 2007

6. मोहन राकेश के नाट्य साहित्य में स्त्री–पात्रों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन, आभा कुमारी, राँची विश्वविद्यालय राँची, 2018

7. मोहन राकेश की नाट्य–कृतियों की समाजशस्त्रीय अध्ययन, दिनेश्वर कुमार, राँची विश्वविद्यालय, राँची 2009

8. मोहन राकेश के उपन्यासों में आधुनिक जीवन की समस्याएँ, अनुराधा कुमारी, राँची विश्वविद्यालय, राँची 2019

9. मोहन राकेश के नाटकों में व्याप्त आधुनिकता, सिन्धु शर्मा, राँची विश्वविद्यालय, राँची 2019

10. मोहन राकेश के कथा साहित्य का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, भक्तराज शास्त्री, लखनऊ विश्वविद्यालय, 2007

11. मोहन राकेश के साहित्य में मध्यवर्गीय जीवन, सुस्मिता गौड़, असम विश्वविद्यालय, 2016

12. मोहन राकेश के उपन्यासों में नारी, के.वी.एल. संध्या रानी, आंध्र विश्वविद्यालय, 2005

13. मोहन राकशे के कथेतर गद्य, राधेश्याम दुबे, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी 2015

14. मोहन राकेश के कथा–साहित्य में मध्यवर्ग, अनामिका सिंह, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी 2017

उपर्युक्त सूचियों से यह ज्ञात होता है कि मेरा शोध कार्य इन सबसे भिन्न है और मेरा शोध कार्य नवीन और प्रासंगिक होगा।

अन्वेषण कार्य हेतु अध्यायीकरण :

प्रस्तावना :

प्रथम अध्याय : मोहन राकेश का व्यक्तित्व और कृतित्व

(क) मोहन राकेश का व्यक्तित्व

(ख) मोहन राकेश का कृतित्व

द्वितीय अध्याय : हिन्दी कथा–साहित्य का उद्‌भव और विकास

(क) प्रेमचंद पूर्व कथा–साहित्य

(ख) प्रेमचंद युगीन कथा–साहित्य

(ग) प्रेमचंदोत्तर कथा–साहित्य

तृतीय अध्याय : मोहन राकेश के कथा–साहित्य में आधुनिकता का प्रभाव

(क) आधुनिकता का स्वरूप

(ख) पुरानी और नई परम्पराओं में टकराहट

(ग) प्रेम विवाह और अहं भावना

(घ) अकेलेपन की पीड़ा और जीवन व्यर्थता का बोध

(ङ) मानवीय संबंधों में कृत्रिमता के कारण रिश्तों में बिखराव

(च) स्त्री–पुरूष के बीच उत्पन्न मानसिक द्वंद्व

चतुर्थ अध्याय : मोहन राकेश की कहानियों में स्त्री–पुरूष संबंध

(क) 'इंसान के खंडहर' कहानी संग्रह में स्त्री–पुरूष संबंध

(ख) ‘नए बादल’ कहानी–संग्रह में स्त्री–पुरूष संबंध

(ग) ‘जानवर और जानवर’ कहानी–संग्रह में स्त्री–पुरूष संबंध

(घ) ‘एक और जिन्दगी’ कहानी–संग्रह में स्त्री–पुरूष संबंध

(ङ) ‘फौलाद का आकाश’ कहानी–संग्रह में स्त्री–पुरूष संबंध

पंचम् अध्याय : मोहन राकेश के उपन्यासों में स्त्री–पुरूष संबंध :

(क) ‘अंधेरे बंद कमरे’ में स्त्री–पुरूष संबंध

(ख) ‘न आने वाला कल’ में स्त्री–पुरूष संबंध

(ग) ‘अंतराल’ में स्त्री–पुरूष संबंध

पष्ठ अध्याय : मोहन राकेश के कथा–साहित्य में भाषा और शिल्प :

(क) मोहन राकेश की कहानियों में भाषा

(ख) मोहन राकेश के उपन्यासों में भाषा

(ग) मोहन राकेश की कहानियों में शिल्प

(घ) मोहन राकेश के उपन्यासों में शिल्प

उपसंहार / निष्कर्ष

संदर्भ ग्रंथ सूची

वेब / इंटरनेट

संदर्भ ग्रंथ सूची :

(क) आधार ग्रंथ सूची

1. राकेश मोहन, मोहन राकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ, राजपाल एवं सन्स, 1996
2. राकेश मोहन, अंधेरे बंध कमरे, राजकमल प्रकाशन, 1997
3. राकेश मोहन, न आने वाला कल, राजपाल एंड सन्स, 1994
4. राकेश मोहन, अंतराल, राजकमल प्रकाशन, 1995

(ख) सहायक ग्रंथ सूची :

1. गुप्ता मोहन, प्रतिनिधि कहानियाँः मोहन राकेश, राजकमल प्रकाशन, 2023
2. अग्रवाल डॉ० सुषमा, कहानीकार मोहन राकेशन, पंचशील प्रकाशन, 1979
3. प्रभाकर ओम, कथाकृति मोहन राकेश, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस दिल्ली, 1992

uksV %& vko';drkuqlkj 'kks/k izk:i dh :ijs[kk esa cnyko fd;k tk ldrk gSA